ओ३म्

क्या वेदव्यासजी पुराणों के रचयिता थे ?

लेखक :—

वैदिक गवेषक डॉ० शिवपूजन सिंह कुशवाह शास्त्री (वाराणसी)
एम० ए० (आगरा), साहित्यालंकार (देवघर),
विशारद (प्रयाग), विद्यावाचस्पति,
सिद्धान्तवाचस्पति

वेद व सृष्टि संवत् १,९७, २९,४९,०८८
दयानन्दाब्द १६४
विक्रम् संवत् २०४५
सन् १९८८ ई०

प्रकाशक :—

सत्यव्रत वानप्रस्थ वैदिक प्रवक्ता
वेद प्रचार केन्द्र वंगराहा
पत्रालय, कांचा, वाया, विद्यापति नगर
जनपद समस्तीपुर (बिहार)-८४८५०३

प्रथमावृत्ति [१०००]

मूल्य : २-००

पौराणिक मतानुसार पुराण १८ माने जाते हैं और उनके कर्त्ता वेदव्यास (कृष्णद्वैपायन) हैं।

पुराणों की संख्या प्राचीनकाल से १८ मानी गई है। इन अष्टादश पुराणों के नाम प्रायः प्रत्येक पुराण में उपलब्ध होते हैं।

देवीभागवत ने आद्य अक्षर के निर्देश से अष्टादश पुराणों के नाम निर्देश इस लघुकाय अनुष्टुप में निबद्ध कर दिये हैं।

"मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापद्लिंग-कू-स्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्॥"

[श्री देवीभागवत स्कन्ध १, अध्याय ३, श्लोक २] ❁

अर्थ– (१) मकारादि से दो पुराण १. मत्स्य तथा २. मार्कण्डेय, (२) भकारादि दो पुराण ३. भागवत तथा ४. भविष्य (३) ब्रत्रयम् ५. ब्रह्म , ६. ब्रह्मवैवर्त्त, तथा ७. ब्रह्माण्ड, (४) वचतुष्टय– ८. वामन, ९. विष्णु, १०.वायु, ११. वाराह, (अनापत्लिंग-कूस्क– १२. अग्नि, १३. नारद, १४. पद्म, १५. लिंग, १६. गरुड़, १७. कूर्म तथा १८. स्कन्द।"

'विष्णुपुराण' में पुराणों की संख्या —

"आद्यं सर्वपुराणानां पुराणं ब्राह्ममुच्यते।
अष्टादश पुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते॥ २०॥
ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा।
तथान्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्॥ २१॥
आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यन्नवमं स्मृतम्।
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं स्मृतम्॥ २२॥

❁ "श्रीमद्देवीभागवतपुराणम्" पूर्वार्द्धम्, पृष्ठ २८ [संवत् २०१७ वि. सन् १९६० ई. में श्री मनसुखराय मोर ५, क्लाइव रो, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करणम्]

वाराहं द्वादशं चैव स्कान्दं चात्र त्रयोदशम् ।
चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पञ्चदशं तथा ॥ २३ ॥
मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डं च ततः परम् ।
महापुराणान्येतानि ह्यष्टादश महामुने ॥ २४ ॥

—[श्री विष्णु पुराण ३/६] ❁

अर्थ–"पुराणज्ञ पुरुष कुल अठारह पुराण बतलाते हैं; उन सबमें प्राचीनतम ब्रह्म पुराण है ॥ २० ॥ प्रथम पुराण ब्राह्म है, दूसरा पाद्म, तीसरा वैष्णव, चौथा शैव, पांचवां भागवत, छठा नारदीय और सातवां मार्कण्डेय है ॥ २१ ॥ इसी प्रकार आठवां आग्नेय, नवां भविष्यत्, दशवां ब्रह्मवैवर्त्त और ग्यारहवां पुराण लैङ्ग कहा जाता है ॥ २२ ॥ तथा बारहवां वाराह, तेरहवां स्कान्द, चौदहवां वामन, पन्द्रहवां कौर्म तथा इनके पश्चात् मात्स्य, गारुड़ और ब्रह्माण्ड पुराण हैं। हे महामुने ! ये ही अठारह महापुराण हैं ॥ २३-२४ ॥"

१. ब्रह्म, २. पद्म, ३. विष्णु, ४. शिव, ५. भागवत, ६. नारदीय, ७. मार्कण्डेय, ८. अग्नि, ९. भविष्य, १० ब्रह्मवैवर्त्त, ११. लिंग, १२. वाराह, १३. स्कन्द, १४. वामन, १५ कूर्म, १६. मत्स्य, १७. गरुड़ तथा १८. ब्रह्माण्ड–भागवत १२/१३/३-८ तथा मत्स्यपुराण अ. ५३ आदि में पुराणों का निर्देश एक विशिष्ट क्रम के अनुसार है और यही क्रम तथा नाम अन्य पुराणों में भी प्राप्त होते हैं।

❁ "श्री श्रीविष्णुपुराण" [मूल श्लोक और हिन्दी अनुवाद सहित], पृष्ठ २२२ [संवत् २०१८ वि. में गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा मुद्रित व प्रकाशित, पंचम संस्करण]

अष्टादश पुराणों की श्लोक संख्या का निर्देश विभिन्न पुराणों में उपलब्ध होता है। श्लोक संख्या की तारतम्य परीक्षा के लिए यह निर्देश एकत्र प्रस्तुत किया जा रहा है—

	भागवत (१२/१३)	देवीभागवत (१/३)	अग्निपुराण (अ. २७२)	मत्स्य (अ. ५३)
ब्रह्म०	१० सहस्र	१० सहस्र	२५ सहस्र	१३ सहस्र
पद्म	५५ ,,	५५ ,,	—	५५ ,,
विष्णु	२३ ,,	२३ ,,	२३ ,,	२३ ,,
शिव	२४ ,,	२४ सहस्र ६ सौ (वायु)	१४ ,, (वायु)	२४ ,, (वायु)
भागवत	१८ ,,	१८ सहस्र	१८ सहस्र	१८ सहस्र
नारद	२५ ,,	२५ ,,	२५ ,,	२५ ,,
मार्कण्डेय	९ ,,	९ ,,	९ ,,	९ ,,
अग्नि	१५ सहस्र ४ सौ	१६ ,,	१२ ,,	१६ ,,
भविष्य	१४ सहस्र ५ सौ	१४ सहस्र ५ सौ	१४ ,,	१४ सहस्र ५ सौ
ब्रह्मवैवर्त्त	१८ सहस्र	१८ सहस्र	१८ ,,	१८ सहस्र
लिंग	११ ,,	११ ,,	११ ,,	११ ,,
वराह	२४ ,,	२४ ,,	१४ ,,	२४ ,,
स्कन्द०	८१ सहस्र १ सौ	८१ ,,	८४ ,,	८१ ,,

वामन	१० सहस्र	१० सहस्र	१० सहस्र	१० ”
कूर्म	१७ ”	१७ ”	८ ”	१८ ”
मत्स्य	१४ ”	१४ ”	१३ ”	१४ ”
गरुड	१२ ”	१२ सहस्र १ सौ	१२ ”	१२ सहस्र २ सौ
	चार लाख			

श्लोक संख्या की चार सूचियों का यह परीक्षण अनेक वैभिन्य उपस्थित करता है। ब्रह्मपुराण में नारदीय (९२/३१) तथा भागवत के अनुसार १० सहस्र श्लोक हैं, परन्तु अग्निपुराण के अनुसार २५ सहस्र। विष्णुपुराण की श्लोक संख्या ६ सहस्र से लेकर २४सहस्र तक मानी गई है। वायुपुराण की श्लोक संख्या तो साधारणतः २४ सहस्र मानी जाती है, परन्तु देवी भागवत ने इससे ६ सौ श्लोक अधिक माना है, अग्नि पुराण में १४ सहस्र, परन्तु स्वयं ग्रन्थ के भीतर केवल १२ सहस्र। उपलब्ध वायु पुराण में १० सहस्र से कुछ ही अधिक श्लोकों की उपलब्धि मूल द्वादश सहस्रों के पास चली जाती है। मार्कण्डेय की श्लोक संख्या ९ सहस्र सर्वत्र है, परन्तु स्वयं मार्कण्डेय के ही आधार पर वह संख्या केवल ६ सहस्र ९ सौ ही है, (मार्कण्डेय पु० १३४/३९) अग्नि पुराण में इसी प्रकार विभिन्नता श्लोकों के विषय में मिलती है। मत्स्य के अनुसार १६ सहस्र, भागवत के मत में इससे ६ सौ कम, परन्तु स्वयं अग्नि के अनुसार केवल १२ सहस्र और आजकल उपलब्ध संख्या केवल इतनी ही है। स्कन्द की श्लोक-संख्या ८१ सहस्र है, परन्तु अग्नि ने इसमें तीन सहस्र और जोड़कर इसे ८४ सहस्र

बना दिया है। गरुड पुराण की भी ऐसी ही दशा है—भागवत तथा देवी भागवत के अनुसार १९ सहस्र। मत्स्य के अनुसार १८ सहस्र, परन्तु अग्नि के अनुसार केवल ८ सहस्र इस प्रकार इन पुराणस्थ श्लोक संख्या में पर्याप्त भिन्नता है।

इस सूची की तुलना करने पर अग्निपुराण की सूचना अनेक पुराणों के विषय में सब से विचित्र है। उसे छोड़ देने पर भागवत, मत्स्य आदि के वर्णन की समानता है। सम्पूर्ण पुराणों की श्लोक संख्या गिनाने पर चार लाख से कई सहस्र ऊपर ठहरती है, परन्तु सामान्य रूप से चार लाख श्लोकों को संख्या पुराणस्थ श्कोकों की मानी जाती है।

"व्यासरुपमहं कृत्वा संहरामि युगे-युगे।
चतुर्लक्ष प्रमाणेन द्वापरे-द्वापरे सदा॥ ९॥
तथा ऽष्टादशधाकृत्वा भूलोकेऽस्मिन प्रकाश्यते।
तथापि देवलोकेऽस्मिन् शतकोटिप्रविस्तरम्॥ १०॥
तदर्थेऽत्र चतुर्लक्षं संक्षेपेण विशेषितम्॥"

—(मत्स्य पुराणम् अध्याय ५३)★

"एवं पुराणसन्दोहश्चतुर्लक्ष उदाहृतः।

—(श्रीमद्भागवतमहापुराण स्कन्ध १२ अध्याय १३ श्लोक ९)❁

★ "मत्स्यपुराणम्" पृष्ठ १४४ (संवत् २०११ वि. सन् १९५४ ई. में श्री मनसुखराय मोर, ५क्लाइव रो, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करणम्)

❁ "श्रीमद्भागवतं महापुराणं, सामयिकी भाषा टीका संहितम्, पृष्ठ ५१८ (सन् १९५२ में पंडित पुस्तकालय, राजा दरवाज़ा, काशी द्वारा प्रकाशित)

अर्थ–'इस तरह सम्पूर्ण पुराण समूह कुल मिलाकर चार लाख श्लोकों का है।' चार लाख श्लोक मत्स्य व भागवत दोनों मान रहे हैं।

पुराणों के पंच लक्षण हैं :–

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंश्यानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥"

यह लक्षण किंचित् पाठ भेद से या ऐक्यरूपेण इन पुराणों में भी प्राप्त होता है—मार्कण्डेय १३४/१३; विष्णु पुराण ३/६/२४; वराह २/४; अग्नि १/१४; भविष्य २/५; ब्रह्मवैवर्त्त १३३)६; ब्रह्माण्ड (प्रक्रिया पाद १/३८); स्कन्द पुराण (प्रभासखंड २/८४); कूर्म पूर्वार्द्ध १/१२; मत्स्य ५३/६४; गरुड (आचारखड २/२८); शिवपुराण (वायवीय संहिता १/४१)।

अर्थ— जगत् की तथा उसके नाना पदार्थों की उत्पत्ति अथवा सृष्टि 'सर्ग' कहलाती है। सर्ग से विपरीत वस्तु अर्थात् प्रलय को प्रतिसर्ग कहते हैं। ब्रह्माजी के द्वारा जितने राजाओं की सृष्टि हुई है, उनकी भूत, भविष्य तथा वर्तमानकालीन सन्तान परम्परा को वंश नाम से पुकारते हैं। मनु, देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तर्षि और भगवान् के अंशावतार इन छः विशिष्टताओं से युक्त समय को 'मन्वन्तर' कहते हैं। पूर्वोक्त वंशो में उत्पन्न हुए वंशधरों का तथा मूलपुरुष राजाओं का विशिष्ट विवरण जिसमें वर्णित होता है उसे 'वंशानुचरित' कहते हैं।

पौराणिक लोग 'भागवत' को वेदव्यास की कृति मानते हैं; परन्तु आजकल दो भागवत पाए जाते हैं, एक श्रीमद्भागवत महापुराण, द्वितीय देवीभागवत महापुराण।

शिवपुराण, उमासंहिता अ० ४४ श्लोक ११६ से १२६ तक

में सभी पुराणों के नाम हैं जिसमें भगवती दुर्गा का चरित्र चित्रण हो उसको 'भागवत' माना है।

पं० कालूराम शास्त्री ने अपने "पुराणवर्म" पूर्वार्द्ध, द्वितीय संस्करण पृष्ठ १२१ से १२३ तक में दोनों भागवतों को प्रामाणिक मानकर दोनों को अठारह पुराणों के अन्तर्गत ही माना है।

विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र ने "अष्टादश पुराण दर्पण" प्रथम संस्करण (सन् १९०५ ई.) पृष्ठ १५४ से १९४ तक में भागवतों के सम्बन्ध में लिखते हुए दोनो को महापुराण माना है।

पं० श्री कृष्णमणि त्रिपाठी व्याकरणाचार्य, एम० ए० ने "पुराण तत्त्व मीमांसा" प्रथम संस्करण, पृष्ठ १३२ से १३९ में भागवत के सम्बन्ध में विचार करते हुए दोनों को ही पुराण माना है।

पं० माधवाचार्य शास्त्री ने "पुराण-दिग्दर्शन" (संवत् २००६ वि. दिल्ली) पृष्ठ २६ में दोंनों भागवतों को पुराण माना है।

पं० बलदेव उपाध्याय एम० ए०, साहित्याचार्य ने "पुराण विमर्श" प्रथम संस्करण' पृष्ठ १०९ से ११७ तक में श्रीमद्भागवत की महापुराणता" लिखते हुए कहा है–"इन तर्कों पर ध्यान देने से देवीभागवत की उपपुराणता तथा श्रीमद्भागवत को महा-पुराणता स्पष्टतया सिद्ध होती है।

प्राचीनकाल में "नारद" व "पाद्म के मत से "विष्णु भाग-वत" ही महापुराण है, किन्तु मत्स्यादि मत से "देवी भागवत" ही महापुराण में गिना जाता है। वास्तव में दोनों ही साम्प्रदायिक ग्रन्थ हैं और वेदव्यास के नाम पर प्रसिद्ध किए गए हैं।

श्री रामाश्रय जी ने "दुर्जनमुखचपेटिका" पुस्तक में देवीभाग-वत वाले को कोसा है और श्रीमद्भागवत की सत्यता का निर्धारण

किया है। श्री काशीनाथ जी कृत "दुर्जन मुख महाचपेटिका" है जिसमें देवी भागवत का पक्षपोषण किया गया है।

श्री पुरुषाधम जी कृत "दुर्जनमुख पद्मपादुका" है जिसमें श्री मद्भागवत का पक्ष है।

श्री मधुसूदन सरस्वती के "सर्व शास्त्रार्थ संग्रह" में श्री नागोजी भट्ट के निबन्ध में श्री पुरुषोत्तम के "भागवत स्वरूप विषय शंका निराश" में श्री मद्भागवत को महापुराण कहा गया है।

भागवत के भाष्यकार श्री श्रीधर स्वामी ने "श्रीमद्भागवत" को प्रामाणिक माना है।

"अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवती सुतः"

—[श्रीदेवीभागवत पुराण स्कन्ध १ अ० ३ श्लोक १७]

सत्यवती के पुत्र (व्यासजी) ने अठारह पुराणों को बनाया

भविष्य पुराण में पुराण बनाने वाले की सूची है जिससे बुद्धिमान् पाठक भलीभाँति समझ सकते हैं कि पुराणों का कर्त्ता कोई निश्चित नहीं है।

"पाराशरेण रचितं पुराण विष्णु दैवतम्।
शिवेन प्रोक्तं स्कान्दं पाद्यं ब्राह्ममुखोद्भवम्॥ १०॥

शुकेन प्रोक्तं भागवतं ब्राह्मं वै ब्रह्मणा कृतम्।
गारुडं हरिणा प्रोक्तं षड् वै सात्त्विक संभवाः॥ ११॥

मत्स्यः कूर्मो नृसिंहश्च वामनः शिव एव च।
वायुरेत व्युराणानि व्यासेन रचितानि वै॥ १२॥

राजसाः षट् स्मृता वीरकर्मकाण्डमया भुवि।
मार्कण्डेयं च वाराहं मार्कण्डेयेन निर्मितम्॥ १३॥

आग्नेयमं गिरश्चैव जनयामास चोत्तमम् ।
लिङ्गं ब्राह्माण्ड के चापि तण्डिना रचिते शुभे ।
महादेवेन लोकार्थं भविष्यं रचितं शुभम् ॥ १४ ॥
तामसाः षट् स्मृताः प्राज्ञैः शक्ति धर्मपरायणाः ॥ १५ ॥
प्रोक्तान्युपपुराणानि सूतेनाष्टादशैव च ॥ १७ ॥"

–[भविष्य पुराण, प्रति सर्ग पर्व ३, खण्ड ३, अध्याय २८] ❁

अर्थ — "वैष्णव पुराण पराशर ने रचा है। स्कन्द पुराण शिव ने बनाया तथा पद्म पुराण ब्रह्मा के मुख से प्रकट हुआ ॥ १० ॥ भागवत पुराण को शुकदेव ने कहा – ब्रह्मा पुराण निश्चय ही ब्रह्मा ने बनाया है। गरुड़ को हरि ने कहा–ये छः पुराण निश्चत सत्व गुणयुक्त प्रकट हुए हैं ॥ ११ ॥

मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, वामन, शिव और वायु ये छः पुराण निश्चय व्यासजी ने बनाए हैं ॥ १२ ॥ ये छः पुराण पृथ्वी में कर्मकांड से युक्त रजो गुण वाले कहे जाते हैं। मार्कण्डेय और वाराह, मार्कण्डेय ने बनाए हैं ॥ १३ ॥ उत्तम अग्नि, को अंगिरा ने बनाया तथा लिंग व ब्रह्माण्ड ये दोनों तण्डी के बनाए हैं। महादेवजी ने लोक के हित के लिए कल्याणकारी भविष्य को बनाया ॥ १४ ॥ ये छः पुराण शक्तिधर्म से युक्त तमोगुणवाले कहे जाते हैं ॥ १५ ॥ और १८ उपपुराण सूतजी ने बनाए हैं ॥ १७ ॥

श्री सम्पूर्णानन्द जी बी०एस०सी० लिखते हैं '... ... ... सब पुराणों का रचयिता एक व्यक्ति को मानना संभव नहीं

❁ "भविष्य महापुराण, सटिप्पणी मूलमात्र" पृष्ट ५१६ – [संवत् २०१५ दि० सन् १९५९, में श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई द्वारा मुद्रित व प्रकाशित]

प्रतीत होता"। ❁

इनके मत में अष्टादश पुराणों के कर्त्ता भिन्न-२ व्यक्ति हैं।

श्रीमद्भागवतमहापुराण (वैष्णव) का कर्त्ता 'बोपदेव' था—

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास' में लिखते हैं — "जो अठारह पुरणों के कर्त्ता व्यासजी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते, क्योंकि शारीरिक सूत, योगशास्त्र के भाष्य आदि व्यासोक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यासजी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक यो ी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते और इससे यह सिद्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोल कल्पित ग्रन्थ बनाये हैं' उनमें व्यासजी के गुणों का लेश भी नहीं था और वेद शास्त्र विरुद्ध असत्यवाद लिखना व्यास सदृश विद्वानों का काम नहीं किन्तु यह काम विरोधी, स्वार्थी, अविद्वान् पामरों का है।··· ··· ··· ···

इत्यादि बारह स्कन्धों की सूची इसी प्रकार बोवदेव पण्डित ने बना कर हेमाद्रि सचिव को दिया। जो विस्तार देखना चाहे वह बोबदेव के बनाए हिमाद्रि ग्रन्थ में देख लेवे ? "··· ··· ··· ···

महर्षि दयानन्दजी के लेख की पुष्टि :— "हरिलीलामृत (हिमाद्रि ग्रन्थ पर श्रीमधुसूदन सरस्वती कृत टीका) के प्रत्येक स्कन्ध के अन्त में इस प्रकार मिलता है — " इति श्री भागवते श्री मधुसूदन सरस्वती कृतायां हरिलीलामृत टीकायां ··· ··· ···

❁ "हिन्दूदेव परिवार का विकास" पृष्ठ १२१ [सन् १९६४ ई, प्रयाग, प्रथम संस्करण]

स्कन्धः समाप्तः । "कहीं-२ श्री भगवते" शब्द के आगे 'महापुराणे' शब्द भी है तथा मूल के प्रत्येक स्कन्ध के अंत में 'इतिः श्री भागवते प्रथम स्कन्धः' लिखा मिलता है। कहीं-२ 'समाप्तः' पद भी अन्त में है। इससे इसे भागवत महा-पुराण समझना अयुक्त नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश के कर्त्ता के पास इस ग्रन्थ के केवल तीन पत्र थे, जैसा कि उन्होंने यहां लिखा है। तीसरे पत्र में प्रथम स्कन्ध समाप्त होता है और उसके अन्त में 'इति श्री भागवते प्रथम स्कन्धः' लिखा हुआ उन्होंने देखा। आरम्भ के श्लोक के साथ इसको मिलाकर पढ़ने से प्रत्येक इसी परिणाम पर पहुँचेगा कि यह भागवत पुराण हैं और बोवदेव द्वारा रचित है।" ❁

"पण्डित मण्डली में वोबदेव और बोपदेव दोनों नाम प्रचलित हैं" ❀

पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र 'विद्यावारिधि' लिखते हैं :- ·····'इस देश में अनेक लोगों का विश्वास है कि विष्णु भागवत सुप्रसिद्ध बोपदेव की बनाई हुई है। वास्तविक बोपदेव रचित भगवतानुक्रम भी पाया गया है। बड़े ही आश्चर्य का विषय है। कोलब्रुक प्रमुख अनेक पाश्चात्य पंडित भी वोपदेव को भागवत रचयिता कह कर विश्वास करते हैं। ... ..." +

❁ वे० शा० स्वामी वेदानन्द जो तीर्थ कृत" सत्यार्थ प्रकाश सटिप्पणी, प्रथमावृत्ति, पृष्ठ ३०० की पादटिप्पणी।

❀ वही, पृष्ठ ३०१ की पाद-टिप्पणी।

+ "अष्टादश पुराणदर्पण" पृष्ठ १८७ [संवत् १९९३वि, बम्बई संस्करण]

'देवीभागवत के नीलकण्ठ टीका' की भूमिका में देखिए—

'विष्णुभागवतं बोपदेव कृत मितिवदन्ति'' अर्थात्-देवीभागवत की महापुराणान्तर्गत मानने वाले विष्णुभागवत को बोपदेव कृत बताते हैं। इससे यह विदित हो गया कि श्री मद्भागवत को बोपदेव कृत मानना उस समय भी प्रचलित था' जब कि देवी भागवत पर नीलकण्ठ ने टीका बनाई।'' ❀

पुराण की अन्तः साक्षी —

''तोतादर्यां द्विजाकश्चिद्बोपदेव इति श्रुतः।
बभूव कृष्ण भक्तश्च वेदवेदाङ्गपारगः॥ १ ॥
गत्वा वृन्दावनं रम्यं गोप गोपीनिषेवितम्।
मनसा पूजयामास देवदेवं जनार्दनम्॥ २ ॥
वर्षान्ते च हरिः साक्षात् ददौ ज्ञानमनुत्तमम्।
तेन ज्ञानेनं संग्रासाहृदि भागवती कथा॥ ३
शुकेनवर्णिता या वै विष्णुराताय धीमते।
तां कथां वर्णयामास मोक्षमूर्ति सनातनीम्॥ ४ ॥
··· त्वया दत्तं भागवतं श्रीमद्व्यासेन निर्मितम्।
माहात्म्यं तस्य मे ब्रूहि यदि दत्तो वरस्त्वया॥ ७ ॥

— [भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व ३, खण्ड २, अध्याय ३२] ❀

अर्थ — ''तोतादरी में बोपदेव नामधारी कोई द्विज हुआ था। वह श्री कृष्ण का परम भक्त था और वेदों तथा वेदों के अंगों में पारंगत था॥ १॥ वह गोपों और गोपियों से निषेवित रम्य वृन्दावन

❀ पं० तुलसीराम जी स्वामी कृत ''भास्कर प्रकाश'' पृष्ठ ३५० [स्वामी प्रेस, मेरठ, चतुर्थ संस्करण]

❀ भविष्य महापुराण, सटिप्पणी मूलमात्र, पृष्ठ ४६०.

में गया और वहाँ उसने देवों के देव जनार्दन की मन से पूजा की थी ॥ २ । एक वर्ष के अंत में हरि ने साक्षात् आकर उसे उत्तम ज्ञान प्रदान किया था । उस ज्ञान से संग्राम भागवती कथा हृदय में वर्णित हुई । शुकदेव जी ने जो पहले विष्णुरात (परीक्षित) से जो कि परम धीमान् था, वर्णित की थी, उसी मोक्षकी मूर्ति सनातनी कथा का वर्णन किया था ॥ ३-४ ॥ ..... अपने ही श्री मद्व्य.स के द्वारा निर्मित भागवत का प्रदान कियाहै । यदि आपने मुझे वर-दान दियाहै तो उस भागवत के माहात्म्यका वर्णन करिए ॥ ७ ॥"

"भागवत के प्रसिद्ध टीकाकार श्री पं. श्रीधर जी हैं उनकी टीका देखने से पता लगता है कि उस समय तक प्राय: लोग भागवत को वोपदेव कृत ही मानते थे तभी तो उक्त पं. जी को उन सबके इस मन्तब्य में परिवर्तन कराने के लिए शुकदेव जी का पं. बोपदेव जी से मिलना और फिर उनके द्वारा बोपदेव को भागवत का उपदेश दिया जाना मिथ्या कल्पना करके "वोप-देव कृत मिति शङ्कनीयम्' अर्थात् यह भागवत बोपदेव कृत है ऐसी किसी को शंका न करनी चाहिए, लिखना पड़ा ।....."★

"योगीन्द्राय नमस्तस्मै शुकाय ब्रह्मरुपिणे"

— [भागवत १२/१३/२१]

अर्थ – 'ब्रह्मरूप योगिराज श्री शुकदेव जी को भी नमस्कार है ।

यदि वेदव्यास भागवत के रचयिता होते तो अपने पु

★ "श्रीमद्भागवत-तत्त्वमीमांसा," प्रस्तावना पृष्ठ (झ) (ञ
[सन् १९३८ ई. में प्रभाकर प्रेस, घीयामंडी, मथुरा
मुद्रित]

शुकदेव जी को नमस्कार क्यों किये ?

पं० अखिलानन्द शर्मा कविरत्न लिखते हैं :—

"वेदान्त दर्शन करः क्व मुनीश्वरोसौ,
व्यासः क्व भागवत् लेखक बोपदेव।
मन्दैर मन्द चरितोऽपि समं प्रयुक्ता,
मन्देऽसमान रचना पटुभिपुराणैः ॥ ८७ ॥"

—[दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य, सर्ग १०] +

'वेदान्तदर्शन के बनाने वाले कहाँ महर्षि व्यास जी और कहाँ भागवत का बनाने वाला बोपदेव ! तथापि अल्पज्ञों ने दोनों की रचनाओं में भेद न जानकर बोपदेव की रचना को ही व्यासदेव जी के नाम से प्रसिद्ध कर दिया।"

अष्टादश पुराण वेद व्यासजी कृत नहीं हैं। ये भिन्न-२ समय में भिन्न-२ सम्प्रदायिकों के बनाये हुए हैं।

'भविष्य पुराण' में आंगल भाषा के शब्द पाए जाते हैं जिसे वेदव्यास नहीं जानते थे।

श्रीरामानन्द, निम्बादित्य, मध्वाचार्य, श्रीधराचार्य, विष्णु स्वामी, भट्टोजिदीक्षित, वाराहमिहिर, धन्वन्तरि, जयदेव कृष्णचैतन्य, श्री शंकराचार्य, आनन्द गिरि, गोरखनाथ, रामानुज नामदेव, कबीर, नरसी, पीपा, नानक, नित्यानन्द, रैदास आदि की चर्चा भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व, चतुर्थ खण्ड में है।

"ईशपुत्रं च मां विद्धि कुमारी गर्भ संभवम् ॥ २३ ॥

—[भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खंड, अध्याय २]

कुमारी (मरियम) के गर्भ से उत्पन्न ईशपुत्र (ईसामसीह) की चर्चा है।

+ इण्डियन प्रेस, प्रयाग द्वारा मुद्रित व प्रकाशित, प्रथम संस्करण।

"ईशामसीह इति च मम नाम प्रतिष्ठितम् ॥ ३१ ॥

–[भविष्य पु० प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खं० अ० ३]

यहाँ भी 'ईसामसीह' का नाम है।

"एतस्मिन्नन्तरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः।
महामद इति ख्यातः शिष्य शाखा समन्वितः ॥ ५ ॥
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारुणम् ॥ २४ ॥
लिंगच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रु धारी सदूषकः।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनोमम ॥ २५ ॥
तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकः।
इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृतः ॥ २७ ॥ "

–[भविष्य पुराण: प्रतिसर्गपर्व, खंड ३, अध्याय ३]

यहाँ हजरत मुहम्मद (महामद) की चर्चा है कि उन्होंने पैशाचधर्म को चलाया। उनके अनुयायी लिंगच्छेदी (सुन्नत), शिखारहित, दाढ़ी मूंछ रखने वाले, उच्चस्वर से नमाज पढ़ने वाले, सब कुछ भक्षण करने वाले धर्मदूषक मुसलमान होंगे।

'भविष्य पुराण प्रतिसर्गपर्व, खण्ड ४,अध्याय २२, श्लोक ७२, ७५, ८५, में अंग्रेजों के भारत आकर कलकत्ता को राजधानी बनाने व राज्य करने, लार्ड वेकल व वार्डिली का उल्लेख है।

इसका तात्पर्य यह है कि यह पुराण अंग्रेजी शासन काल तक बनता रहा। यदि महाभारतकालीन वेदव्यास जी कृत भविष्य पुराण है और इनको भविष्य कथन माना जावे तो इसमें महर्षि दयानन्दजी सरस्वती, महात्मागाँधी, पटेल, पं. नेहरू, भारत की स्वाधीनता, पाकिस्तान की चर्चा क्यों नहीं है ?

सभी पुराणों में परस्पर विरोध है। एक पुराण दूसरे पुराण के देवों की निन्दा करते हैं। यदि वेद व्यास जी कृत होते तो

परस्पर विरोध न होते।

वेद व्यास कौन थे ?

वेदव्यास निषादराज की पुत्री सत्यवती के गर्भ से पराशर मुनि के वीर्य से उत्पन्न हुए थे। उनका जन्म यमुना के एक द्वीप में हुआ था और इसीलिए वे 'द्वैपायन' नाम से प्रख्यात थे। उनका शरीर कृष्णवर्ण का था और इसी से वे कृष्ण या कृष्णमुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए। दोनों को मिलाने से उनका पूरा नाम कृष्ण द्वैपायन था।

"व्यासंवसिष्ठनप्तारं शक्तेः 'पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं, वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्॥"

अर्थ – "व्यास जी वसिष्ठ के प्रपौत्र, शक्ति के पौत्र, पराशर के पुत्र तथा शुकदेव के पिता थे।"

वशिष्ठ जी ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। अतः व्यास जी की पारिवारिक परम्परा इस प्रकार है — ब्रह्मा
वसिष्ठ
शक्ति
पराशर
व्यास (कृष्णद्वैपायन)
शुकदेव

यह तो वर्तमानयुगीन व्यास का निर्देश है।

"पौराणिकानां व्यभिचारदोषो नाशङ्कनीयः कृतिभिः कदाचित्।
पुराणकर्त्ता व्यभिचारजातस्तस्यापि पुत्रो व्यभिचारजातः।" ❁

— [सुभाषित रत्न भाण्डागारम्, १ प्रकरणम्]

❁ पं० नारायणराम आचार्य "काव्यतीर्थ" द्वारा संशोधित "सुभाषित रत्न भाण्डागारम्" पृष्ठ ४४ [सन् १९७८ ई. में मुन्शीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्रा० लि० ५४ रानी झांसी रोड नई दिल्ली ५५ द्वारा प्रकाशित]

पौराणिकों में व्यभिचार दोष नहीं है। पुराणकर्त्ता (व्यास जी) व्यभिचार से ही उत्पन्न हुए थे।

इसीलिए वेदव्यास को 'कानीन' पुत्र कहा गया है। वे एक कुमारी कन्या से उत्पन्न हुए थे।

पराशर ऋषि का कुमारी कन्या सत्यवती के साथ बलात्कार—

वेदव्यास के पिता पराशर जी 'पराशर स्मृति' के प्रणेता थे। इन्होंने निषाधराज की कन्या 'सत्यवती' से नौका में बलात्कार करके 'वेदव्यास' कानीन पुत्र को उत्पन्न किया था, इसकी कथा 'महाभारत' में स्वयं उनके सुपुत्र ने लिखी है।

पराशर जी एक बार तीर्थयात्रा को निकले कि अकस्मात् यमुना नदी को इन्हें नौका द्वारा पार कराती हुई सत्यवती से आँखे चार हो गई। तीर्थयात्रा का पुण्य अर्जित करने चले थे, पर यहाँ तो एक दूसरे ही तीर्थ में गोता लगाने का निश्चय किया। वे उसके अतुल रूप-यौवन को देखते ही कामान्ध हो उठे। किसी ने कहा भी है कि—**कामतुराणां न भयं न लज्जा**''—जो कामी मनुष्य हैं उनको अधर्म से भय वा लज्जा नहीं होती।

सत्यवती के लाख मना करने पर भी आपने सारे योगबल को भाड़ में झोंक कर अपनी काम-पिपासा शान्त की। उनके मैथुन विषयक प्रस्ताव को सुनकर सत्यवती ने कहा कि हे भगवन्! नदी के दोनों किनारों पर ऋषियों के आश्रम हैं। वहाँ पर ऋषि लोग खड़ें हैं; उन लोगों के सामने हम दोनों का समागम किस प्रकार हो सकता है? इस पर ऋषि पराशर ने निहार उत्पन्न कर दिया जिससे सम्पूर्ण देश अन्धकार मय हो गया। जब सत्यवती ने देखा कि उसकी प्रथम आपत्ति खाली गई तो उसने

एक दूसरी अड़चन डाल कर इस महान् पाप-कर्म को रोकना चाहा :—

सत्यवत्युवाच —

"विद्धि मां भगवन् ! कन्यां सदा पितृवशानुगाम् ॥ ७५ ॥
त्वत्संयोगच्च दुष्यते कन्याभावो ममानघ ।
कन्यात्वे दूषिते वापि कथ शक्ष्ये द्विजोत्तम ॥ ७६ ॥
गृहं गन्तुमृषे चाहं धीमन ! नस्थातुमुत्सहे ।
एतत् संचिन्त्य भगवन् ! विधत्स्व यदनन्तरम् ॥ ७७

—[महाभारत, आदि पर्व, अध्याय ६३] ❁

पं० रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम' कृत भा.टी. —"सत्यवती ने कहा—भगवन् ! आप को मालूम होना चाहिये कि मैं सदा अपने पिता के अधीन रहने वाली कुमारी कन्या हूँ ॥ ७५ ॥ निष्पाप महर्षे ! आप के संयोग से मेरा कन्या भाव (कुमारापन) दूषित हो जायेगा । द्विजश्रेष्ठ !

कन्याभाव दूषित हो जाने पर मैं कैसे अपने घर जा सकती हूँ । बुद्धिमान् मुनीश्वर ! अपने कन्यापन के कलंकित हो जाने पर मैं जीवित रहना नहीं चाहती । भगवान् ! इस बात पर भली-भाँति विचार करके जो उचित जान पड़े, वह कीजिये ॥ ७६-७७ ॥"१

सत्यवती निश्चित केवट कन्या थी । इसकी पुष्टि पं० सत्यव्रत जी सामश्रमी करते हैं कि :—

"अतएव धीवरो गर्भजस्य वेदव्यासस्य विप्रमुपपद्यते ।"

❁ तुलना करो पं० श्री पाद दामोदर सातवलेकर द्वारा सम्पादित "महाभारत आदि पर्व [मूल संस्कृत श्लोक और हिन्दी अर्थ सहित], पृष्ठ ३०२, अध्याय ५७ श्लोक ६१, ६२, ६३, [संवत् २०२५ वि. सन् १९६८ ई० में स्वाध्याय मंडल, पारडी जि० बलसांड द्वारा प्रकाशित, प्रथमावृत्ति]

–[ऐतरेयालोचनम् द्वितीय संस्करण, पृष्ठ १३]

अर्थात्–"इसलिए धीवरी सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न वेदव्यास विप्र हुए।'

अन्य प्रमाण–सत्यवती की फटकारः–

"वसिष्ठस्य कुले रम्ये त्वं जातोऽसि महामते।
निषादजा त्वहं ब्रह्मन्कथं संगोघटेत नौ ॥१२॥
दुर्गन्धाऽहं मुनिश्रेष्ठ कृष्णवर्णा निषादजा।
भवांस्तु परमोदार विचारो योगिसत्तमः ॥१६॥"

–[श्री शिव महापुराणो, उमा संहितायां, अध्याय ४४]

अर्थ–"हे महामयि ! आप अच्छे वसिष्ठ के कुल में उत्पन्न हुए हैं। मैं मल्लाह से उत्पन्न हुई हूँ। फिर आप का समागम कैसे हो सकता ? १२॥ हे मुनि श्रेष्ठ ! मैं काली कलूटी, दुगन्ध-वाली और निषाद से उत्पन्न हुई हूँ। आप परम उदार विचार वाले हैं, योग में लगे हैं।"

पराशर ऋषि ने सत्यवती की उचित आपत्ति व फटकार पर किंचिन्मात्र भी ध्यान न देते हुए उस कन्या का शीलभंग करके महान् पाप किए जिससे वेदव्यास उत्पन्न हुए।

---

१. "महाभारत (प्रथम खण्ड) [आदि पर्व और समापर्व], पृष्ठ-१७६ [संवत् २०२५ वि. में गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा मुद्रित व प्रकाशित, तृतीय संस्करण]

"श्री शिव महापुराणम् (पाण्डेयेन रामतेज शास्त्रिणा सम्पादित), पृष्ठ ८६३ [संवत् २०२० वि. में पण्डित पुस्तकालय काशी द्वारा प्रकाशित]

तुलना करो मासिक पत्रिका "पाखण्ड खण्डिनी पताका" वाराणसी, वर्ष २, नवम्बर १६३५ ई., अङ्क ३, पृष्ठ ८.

इस वेदव्यास ने पुराणों का प्रणयन नही किया था।

अष्टादश पुराणों में ऋषि, मुनियों और देवताओं की निन्दा लिखी है और उनपर मिथ्या कलंक लगाये हैं। 'वेदान्त दर्शन' के कर्त्ता वेदव्यास क्या ऐसा अपशब्दों का व्यवहार ऋषियों के विरुद्ध कर सकता है?

मिथ्या कलंक—ब्रह्माजी पर पुत्री समागम का कलंक, कृष्ण जी को कुब्जा और राधिका से, महादेव जो को ऋषि पत्नियों से विष्णु जलधर की पत्नी वृन्दा से, इन्द्र को गौतम की पत्नी से, सूर्य को कुन्ती से, चन्द्रमा को अपने गुरु बृहस्पति की स्त्री तारा से, वायु देवता को केसरी वानर की स्त्री अंजना से, वरुण देवता को अगस्त्य देवता की माता उर्वशी से, बृहस्पति को अपने भ्राता की पत्नी ममता से, विश्वामित्र को मेनका से, पराशर को मत्स्योदरी से, द्रौपदी को पंच पतियों से, वामन को छल से, वलदेव कों मद्यपान से, कलंकित किया है। रामचन्द्र जी को छल से वीर बालो के वध आदि का कलंक लगाया है परन्तु बुद्ध पर कोई कलंक नहीं लगाया।

इससे पुराणों के कर्त्ता बौद्धों का होना अमर हुतात्मा पं० लेखराम जी आर्य पथिक मानते हैं।[1]

पुराण वेदव्यास जी कृत नहीं इसमें पुराणों की ही अन्त:साक्षे—

पुराणों के कर्त्ता पराशर जी थे—

श्री पराशर जी बोले – 'हे धर्मज्ञ मैत्रेय ! मेरे पितामह

---

[1] "कुलियात आर्य मुसाफिर" दूसरा भाग पृष्ठ १४१ [पं० शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी द्वारा अनुवादित, सन् १९७२ ई० में मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरूदत्त भवन, जालन्धर नगर द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण]

श्री वसिष्ठ जी ने जिसका वर्णन किया था और राक्षसों का विध्वं-
स करने के लिए यज्ञ किया था उस समय पुलस्त्य जी ने कहा -

"सन्ततेर्न ममोच्छेदः क्रुद्धेनापि यतः कृतः ।
त्वया तस्मान्महाभाग ददाम्यन्यं महावरम् ॥ २५ ॥
पुराण संहिताकर्ता भवान्वत्स भविष्यति ।
देवता पारमार्थ्यं च यथावद्वेत्स्यते भवान् ॥ २६ ॥
सोऽहं वदाम्यशेषं ते मैत्रेय परिपृच्छते ।
पुराणसंहितां सम्यक् तां निबोध यथातथम् ॥ ३० ॥"

[श्री विष्णु पुराण प्रथम अंश,अध्याय १]

अर्थः- हे महाभाग !अत्यन्त क्रुद्ध होने पर भी तुमने मेरी सन्तान का सर्व का मूलोच्छेद नहीं किया ! अतः मैं तुम्हे एक और उत्तम वर देता हूँ ॥ २५ ॥ हे वत्स ! तुम पुराण संहिता के रचयिता होगे और देवता (परमात्मा) के वास्तविक स्वरूप को यथावत् जानोगे ॥ २६ ॥ हे मैत्रेय ! तुम्हारे पूछने से मैं उस सम्पूर्ण पुराण संहिताओं को तुम्हें सुनाता हूँ ; तुम उसे भली प्रकार ध्यान देकर सुनो ॥ ३० ॥ ★

पुराण ब्रह्माजी ने बनाये—

"लब्धविद्येन विधिना प्रजासृष्टि वितन्वता ।
प्रथमं सर्वशास्त्राणां पुराणं ब्रह्ममा स्मृतम् ॥ ३१ ॥
अनन्तरं तु वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः ।
प्रवृत्तिः सर्वशास्त्राणां तन्मुखादभवत्ततः ॥ ३२ ॥

—[श्री शिव पुराणो वायवीय संहितायां अध्याय-१]

अर्थ–"ब्रह्माजी ने विद्या को प्राप्त करके प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से सब शास्त्रों में प्रथम पुराणों को उत्पन्न किया ॥ ३१ ॥ उसके पश्चात् उनके मुख से वेदा निर्गत हुए । उसके बाद ब्रह्मा के मुख से सब शास्त्रों की प्रवृत्ति हुई ॥ ३२ ॥"

★- "श्री श्री विष्णु पुराण, श्री मुनिलाल गुप्तकृत भा. टी. पृष्ठ १३

पुराणं सर्व शास्त्राणां प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम् ॥३॥

—[मत्स्य पुराण, सृष्टि प्रकरणम्, अध्याय ३]

अर्थ- सर्व शास्त्रों प्रथम पुराणों को ब्रह्मा जी ने बनाये।"

धूर्तैः द्वारा पुराण का निर्माणः—

"धूर्त्तैः पुराणचतुरैर्हरि शंकराणां सेवापराश्च विहितास्तव निर्मितानाम्

—[देवी भागवत पुराणम् पूर्वार्द्धम् अध्याय १९ श्लोक १२]

पुराण चतुर, धूर्तों ने बनाया।

पुराणों शूद्रों के लिए बनाये गये-

"विशेषतश्च शूद्राणां पावनानि मनीषिभिः ॥५४॥

अष्टादश पुराणानि चरितं राघवस्य च ॥५५॥

—[भविष्य पुराण, ब्राह्मपर्व अध्याय १]

अर्थ- विशेष कर शूद्रों को पवित्र करने के लिए अठारह पुराण और रामचरित मानस की रचना की गई है।

शास्त्रहीनों के लिए पुराण हैं :-

„वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति शास्त्रं शास्त्रेण हीनाश्च पुराणपाठः। पुराणहीनाः कृषिणो भवन्ति भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति ॥"

— [अत्रि स्मृतिः श्लोक सं० ३७०]

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य- "जो वेदों के ज्ञान से वंचित होते हैं वे शास्त्रों को पढ़ते हैं जो शास्त्र ज्ञान से भी हीन होते हैं वे पुराणों के पाठ को किया करते हैं। जो पुराणों से भी रहित होते हैं वे खेती करते हैं और इस काम से भी भ्रष्ट होने वाले

भागवत बन जाते हैं।" ❁

यही श्लोक "**स्मृतीनां समुच्चयः**" में अत्रि संहिता श्लोक सं. ३८४ है। 🕮

भड़ोच के निवासी पं० वेदमित्र श्री ठाकोर ने इसका गुजराती भाषा में अनुवाद किया—"वेदज्ञान रहित भाणसो शास्त्र वांचे छे। शास्त्रज्ञान रहित माणसो पुराण वांचे छे, पुराण ज्ञान रहित माणसो खेती करे छे, अने भ्रष्टाचारी अधम माणसो भागवत वांचे छे, मोटकल्याण चाहनार माणसे भागवत वांच कुं नहीं, भागवत ए निकृष्ट कोटिनो ग्रन्थ छे।" *

अर्थात्— वेदज्ञान रहित मनुष्य शास्त्र पढ़ते हैं, शास्त्रज्ञान रहित मनुष्य पुराण पढ़ते हैं पुराणज्ञान रहित मनुष्य कृषि करते हैं, दूसरे भ्रष्टाचारी अधम मनुष्य भागवत पढ़ते हैं। अपना कल्याण चाहने वाले मनुष्य से भागवत नहीं पढ़ना चाहिये, भागवत एक निकृष्ट कोटी का ग्रन्थ है।

पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर ३, पं० हनूमान् प्रसाद शर्मा उपदेशक ४, डॉ० श्री राम आर्य ५ ने 'भागवता' का अर्थ "भागवत पुराण वाँचने वाले" ही किया है।

❁ "बीस स्मृतियाँ (द्वितीय खण्ड), पृष्ठ ४२२ [सन् १९८० ई० में संस्कृति संस्थान, वेद नगर, बरेली द्वारा प्रकाशित, द्वितीय संशोधित संस्करण]

🕮 "स्मृतीनां समुच्चयः पृष्ठ २६ [सन् १९२९ ई० में आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना द्वारा मुद्रित व प्रकाशित, द्वितीयेयमङ्कनावृत्तिः]

* "वेद विज्ञान" दिसम्बर १९६१ ई० अंक के पृष्ठ

श्री शिव स्वामी सरस्वती (पं० शिव शर्माजी महोपदेशक) का स्पष्टीकरण—"पौराणिकों के 'भागवता' का अर्थ 'वैरागी, ढोंगी भगत, बगुला भगत करने पर शर्मा जी लिखते हैं;—" निर्वित्सुरिदम प्रज्ञोन्महा भागवतोऽसुरः—"[भागवत ७।१३।१५]

'भागवत' का अर्थ जो बैरागी करते हैं, वे संसार को कितना धोखा देते हैं वास्तव में 'भागवत' का अर्थ वहाँ पर भागवत बाँच कर जीविका चलाने वाले' के हैं। "भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति"।" + पं युधिष्ठर जी मीमांसक लिखते हैं;—"... स्मृतिकार ने वेद पढ़ने वाले से शास्त्र शास्त्र पढ़ने वाले को हीन बताया है, शास्त्र पढ़ने वाले से पुराण पाठियों को निन्द्य कहा है, पुराण पाठियों से भा कृषि करने वाले हीन हैं, उनसे भी हीन भागवतों को बताया है। अतः यहां 'भागवता' का अर्थ भागवत के पढ़ने वाले ही हैं, भगवद्भक्त नहीं। भगवद् भक्तों का कोई भी शास्त्रकर निन्दा नही कर सकता। भगवद् भक्तों का स्थान तो वेदपाठियों से भी ऊपर हैं।... ....." ✡

विशेष :- निम्न संख्या ३, ४, व ५ गत पृष्ठ २३ के अंतिम पैरे से सम्बन्धित है।

३- "कुलियात आर्य मुसाफिर द्वितीय भाग पृष्ठ १४१

४- "शंका कोष" पृष्ठ ४० [नवम्बर सन् १९०४ ई० में स्वामी यन्तालय मेरठ द्वारा मुद्रित]

५- "श्रीमद्भगवत समीश्रा" पृष्ठ १६९ [सन् १९६५ ई० में वैदिक साहित्य प्रकाशन कासगंज द्वारा प्रकाशित]

\+ "शास्त्रार्थ महारथी" पृष्ठ ३६ [प्रथम सस्करण शिव शर्मा प्रकाशन मंदिर संभल, जि० मुरादाबाद द्वारा प्रकाशित]

✡- मासिक "टंकारा पत्रिका" बडौदा, वर्ष ५, अगस्त १९६४ ई०, अंक १० ,पृष्ठ ३ से ९ तक में प्रकाशित भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति, आर्योपदेशक पर अभियोग और उसका निर्णय" शीर्षक लेख।

"वेद विहीनाश्च" ....यह श्लोक "स्मृतिसन्दर्भ, प्रथम भाग" ★ में है। वहाँ अत्रि 'स्मृति' की श्लोक संख्या ३८२ है।" यही श्लोक विक्रम संवत् १९९८ में सस्ता संस्कृत साहित्य मंडल शामली, जिला मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) द्वारा प्रकाशित पृष्ठ १९-२०

अष्टादश स्मृतयः "में है। वहां श्लोक संख्या ३८४ है।

पं० भूमित्र शर्मा आर्य उपदेशक लिखते है :-

".....(भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति) अर्थात जो भागवत को पढ़ते-पढ़ाते मानते हैं वे भ्रष्ट होते हैं। उनके वाक्य में जब कुछ न चली तो भागवत का अर्थ ही बदलने लगे कि यहाँ बैरागियों को भ्रष्ट कहा है यह कैसी धींगाधींगी है भला जिन में राग नही वे भ्रष्ट कैसे? "※"

पुराण मार्ग भटकाने वाले हैं-

"स्मुर्मोहाय चराचरस्य जगतस्ते ते पुराणागमास्तां तामे वहि देवतां परमिकां जल्पन्तु कल्पे विधौ। सिद्धान्ते पुनरेकएव भगवान्विष्णुः समस्तागम् व्यापारेषू विवेकिनां व्यतिकरं नीतेसु निश्चीयते। २७ ,,

—[पद्मपुराण, पातालखण्ड, अध्याय ९७] ✡

★— श्रीमनसुखराय मोर कलकत्ता, प्रथम संस्करण, सन् १९५२ ई० पृष्ठ ३८७

※— "त्रिशूली—त्रिशूलोच्छेदन" (दयानन्द भाव चित्रावली का उत्तर), प्रथम सकरण पृष्ठ, ६.

✡ श्री मनसुख राय मोर, ५ कलाइवरो, कलकत्ता द्वारा विक्रमाब्द २०१५ वि. में प्रकाशित "पद्मपुराणम्" पञ्चमं पातालखण्ड प्रथम संस्करण, पृष्ठ ४२५.

अर्थ– ये सब पुराण शास्त्र जगत् को विशेष मोह में फँसाने वाले हैं ये उस-उस देव जिसकी कल्पना कर लेते हैं, की महिमा में ही कल्प तक बकते रहते हैं। सिद्धान्त में तो फिर एक भगवान् विष्णु को ही सर्व शास्त्रों और व्यापारों आदि में विवेकियों द्वारा निश्चय किया जाता है।"

इन पुराणों से स्पष्ट सिद्ध हो गया कि अष्टादश पुराण वेदव्यासजी कृत नहीं हैं।

॥ समाप्त ॥

★ मुद्रक :— प्रिंट लिंक, कनखल, (फोन नं० १२२२) ★